

डीपफेक: अवसर, खतरे और वनियमन

यह एडिटरियल 06/11/2023 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित ["Rashmika Mandanna's deepfake: Regulate AI, don't ban it"](#) लेख पर आधारित है। इसमें अभिनेत्री रश्मिका मंदाना की हाल में वायरल हुई 'डीपफेक' वीडियो के संदर्भ में चर्चा की गई है और ऐसी प्रौद्योगिकियों के वनियमन के लिये एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर विचार किया गया है।

प्रलमिस के लिये:

डीपफेक, [आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस \(AI\)](#), [आईटी अधिनियम, 2000](#) और [आईटी नयिम, आईटी अधिनियम की धारा 66D](#),

मेन्स के लिये:

डीपफेक: उपयोग, चुनौतियाँ, सरकार द्वारा निर्धारित नयिम एवं आगे की राह

हाल ही में एक फ़ैकट-चेकर वेबसाइट ने खुलासा किया कि लिफ्ट में प्रवेश करती अभिनेत्री रश्मिका की वायरल वीडियो वस्तुतः ["डीपफेक" \(Deepfake\)](#) है। इस वीडियो ने एक बहस छेड़ दी है जहाँ अन्य अभिनेताओं द्वारा डीपफेक वीडियो के कानूनी वनियमन की माँग की जा रही है। इसकी प्रतिक्रिया में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी (IT) राज्य मंत्री ने [आईटी अधिनियम, 2000](#) के अंतर्गत मौजूद वनियमनों का हवाला दिया है जो ऐसे वीडियो के प्रसार से निपट सकते हैं। हालाँकि, डीपफेक के वनियमन के लिये एक समग्र दृष्टिकोण के तहत प्लेटफॉर्म और [सूत्रमि बुद्धिमत्ता \(Artificial Intelligence-AI\)](#) वनियमन के बीच की अंतःक्रिया और उभरती प्रौद्योगिकियों के लिये सुरक्षा उपायों को अधिक व्यापक रूप से शामिल करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक होगा।

डीपफेक क्या है?

- डीपफेक (Deepfake) शब्द सैथिटिक मीडिया को संदर्भित करता है जहाँ किसी व्यक्त की सदृशता को दूसरे व्यक्त की सदृशता से बदलने के लिये डिजिटल रूप से हेरफेर किया जाता है।
- डीपफेक मशीन लर्निंग और AI के प्रभावशाली तकनीकों—जैसे कि डीप लर्निंग (deep learning) और जेनरेटिव एडवर्सरियल नेटवर्क (Generative Adversarial Networks- GANs) का उपयोग कर सृजित किये जाते हैं।
- डीपफेक तकनीक का उपयोग मनोरंजन, शिक्षा, कला और सक्रिय गतिविधियों (activism) जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिये किया जा सकता है।
 - हालाँकि, यह गंभीर नैतिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर सकता है, जैसे फेक न्यूज़ सृजित करना, भ्रामक सूचना का प्रसार करना, नजिता/गोपनीयता का उल्लंघन करना और किसी व्यक्त की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाना।
 - इसका उपयोग नकली या फेक वीडियो बनाने के लिये किया जा सकता है; इसका उपयोग स्कैमर्स द्वारा मतिरों या प्रयोजनों का रूप धारण कर लोगों से धोखाधड़ीपूर्ण तरीके से धन प्राप्त करने के लिये भी किया जा सकता है।

डीपफेक टेक्नोलॉजी के उपयोग

- फ़िल्म डबिंग:** डीपफेक तकनीक का उपयोग विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले अभिनेताओं के लिये यथार्थपरक लिपि-सिंकिंग (lip-syncing) के सृजन के लिये किया जा सकता है, जिससे उक्त फ़िल्म वैश्विक दर्शकों के लिये अधिक अभिगम्य (accessible and immersive) हो जाती है।
 - उदाहरण के लिये, मलेरिया के उन्मूलन का आह्वान करने के लिये एक याचिका शुरू करने के लिये एक वीडियो बनाया गया था, जहाँ डीपफेक तकनीक का उपयोग कर डेविड बेकहम, ह्यूज जैकमैन और बलि गेट्स जैसी मशहूर हस्तियों से विभिन्न भाषाओं में आह्वान कराया गया था।
- शिक्षा:** डीपफेक तकनीक कक्षा में ऐतिहासिक व्यक्तियों को जीवंत करने या विभिन्न परिदृश्यों के इंटरैक्टिव समुल्लेखन बनाने के रूप में शिक्षकों के लिये आकर्षक पाठ प्रदान कर सकने में मदद कर सकती है।
 - उदाहरण के लिये, अब्राहम लिंकिन के प्रसिद्ध गेटसबर्ग संबोधन के डीपफेक वीडियो का उपयोग छात्रों को अमेरिकी गृहयुद्ध के बारे में शिक्षण प्रदान करने के लिये किया जा सकता है।
- कला:** डीपफेक तकनीक का उपयोग कलाकारों के लिये स्वयं को अभिव्यक्त करने, विभिन्न शैलियों के साथ प्रयोग करने या अन्य कलाकारों के साथ सहयोग करने के लिये एक रचनात्मक साधन के रूप में किया जा सकता है।
 - उदाहरण के लिये, फ्लोरिडा में साल्वाडोर डाली के संग्रहालय को बढ़ावा देने के लिये डाली का एक डीपफेक वीडियो सृजित किया गया था,

जहाँ उन्होंने आगंतुकों के साथ संवाद किया और अपनी कृतियों पर टिप्पणी की।

- **स्वायत्तता और अभिव्यक्ति:** डीपफेक तकनीक लोगों को अपनी डिजिटल पहचान को नयित्तरति करने, अपनी गोपनीयता की रक्षा करने या वभिन्न तरीकों से अपनी पहचान व्यक्त करने के लिये सशक्त बना सकती है।
 - उदाहरण के लिये, **रफेस (Reface) नामक एक डीपफेक ऐप** उपयोगकर्ताओं को मनोरंजन या वैयक्तिकरण के लिये वीडियो या जफि (gifs) के रूप में मशहूर हस्तियों या चरित्रों के साथ अपना चेहरा बदलने की अनुमति देता है।
- **संदेश और उसकी पहुँच का वसितार:** डीपफेक तकनीक उन लोगों की आवाज़ और प्रभाव को बढ़ाने में मदद कर सकती है जिनके पास साझा करने के लिये महत्वपूर्ण संदेश हैं, विशेष रूप से वे लोग जो भेदभाव, संसरशपि या हसिा का सामना कर रहे हैं।
 - उदाहरण के लिये, सऊदी सरकार द्वारा हत्या करा दिये गए एक पत्रकार का डीपफेक वीडियो बनाया गया जहाँ उसने अपना अंतिम संदेश दिया और न्याय की गुहार लगाई।
- **डिजिटल पुनर्रिमाण और सार्वजनिक सुरक्षा:** डीपफेक तकनीक गुम या कषतगिरस्त डिजिटल डेटा के पुनर्रिमाण में मदद कर सकती है, जैसे पुरानी तस्वीरों या वीडियो का पुनर्रिमाण या नमिन गुणवत्ता वाले फुटेज को बेहतर बनाना।
 - यह आपातकालीन प्रतिक्रियाकर्ताओं, कानून प्रवर्तन एजेंसियों या सैन्य कर्मियों के लिये यथार्थवादी प्रशिक्षण सामग्री का सृजन कर सार्वजनिक सुरक्षा में सुधार लाने में भी मदद कर सकता है।
 - उदाहरण के लिये, स्कूल में गोलीचालन (शूटिंग) का एक डीपफेक वीडियो बनाया गया ताक शिकषकों को प्रशिक्षित किया जा सके कवि ऐसे परदृश्य में कसि प्रकार प्रतिक्रिया दें।
- **नवाचार:** डीपफेक तकनीक मनोरंजन, गेमिंग या मार्केटिंग जैसे वभिन्न क्षेत्रों और उद्योगों में नवाचार को बढ़ावा दे सकती है। यह स्टोरीटेलिंग, इंटरैक्शन, डायग्नोसिस या प्रत्यायन/अनुनय (persuasion) के नए रूपों को सक्षम कर सकता है।
 - उदाहरण के लिये, सथैटिक मीडिया की क्षमता और समाज पर इसके प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिये मार्क जुकरबर्ग का एक डीपफेक वीडियो बनाया गया था।

डीपफेक प्रौद्योगिकी से संबद्ध चुनौतियाँ

- **झूठी सूचना का प्रसार:** डीपफेक का उपयोग जानबूझकर झूठी जानकारी या गलत सूचना के प्रसार के लिये किया जा सकता है, जो महत्वपूर्ण वषियों के बारे में भ्रम पैदा कर सकता है।
 - उदाहरण के लिये, राजनेताओं या मशहूर हस्तियों के डीपफेक वीडियो का इस्तेमाल जनता की राय को प्रभावित करने या चुनावों को प्रभावित करने के लिये किया जा सकता है।
- **उत्पीड़न और धमकी:** डीपफेक को लोगों को परेशान करने, भयभीत करने, नीचा दिखाने और कमजोर करने के लिये डिज़ाइन किया जा सकता है।
 - उदाहरण के लिये, डीपफेक तकनीक अन्य अनैतिक कार्यों को बढ़ावा दे सकती है, जैसे करिविज पोर्न (revenge porn) बनाना, जिससे महिलाएँ असंगत रूप से हानि उठाती हैं।
 - डीपफेक पोर्न पीड़ितों की नजिता एवं सहमति का भी उल्लंघन कर सकता है और मनोवैज्ञानिक संकट एवं आघात (trauma) का कारण बन सकता है।
 - डीपफेक प्रौद्योगिकी का उपयोग ब्लैकमेल या फरिती की सामग्री के नरिमाण के लिये किया जा सकता है, जैसे कसिी व्यक्त द्वारा कोई अपराध करने, परेम प्रसंग रखने या खतरे में होने के नकली वीडियो बनाना।
 - उदाहरण के लिये, एक राजनेता का डीपफेक वीडियो बनाया गया और इसे सार्वजनिक नहीं करने के बदले धन की मांग की गई।
- **झूठे साक्ष्य गढ़ना:** डीपफेक का उपयोग झूठे साक्ष्य गढ़ने के लिये किया जा सकता है, जिसका उपयोग फरि जनता को धोखा देने या राज्य की सुरक्षा को हानि पहुँचाने के लिये किया जा सकता है। डीपफेक साक्ष्य का उपयोग कानूनी कार्यवाही या जाँच में हेरफेर करने के लिये भी किया जा सकता है।
 - उदाहरण के लिये, डीपफेक ऑडियो या वीडियो का उपयोग कसिी की पहचान या आवाज़ का प्रतरूपण करने और झूठे दावे करने या आरोप लगाने के लिये किया जा सकता है।
- **प्रतषिठा धूमलि करना:** डीपफेक का उपयोग कसिी व्यक्त की ऐसी छवि बनाने के लिये किया जा सकता है जैसा वह नहीं है या कसिी को कुछ ऐसा कहते या करते हुए दिखाने के लिये जैसा उसने कभी नहीं किया या कसिी व्यक्त की आवाज़ को ऑडियो फाइल में संश्लेषित करने के लिये किया जा सकता है, जिसका उपयोग फरि उसकी प्रतषिठा को धूमलि करने के लिये किया जा सकता है।
 - उदाहरण के लिये, डीपफेक मीडिया का उपयोग कसिी व्यक्त या संगठन की वशि्वसनीयता या वशि्वस्तता को हानि पहुँचाने और प्रतषिठा संबंधी या वत्तीय नुकसान करने के लिये किया जा सकता है।
- **वत्तीय धोखाधडी:** डीपफेक तकनीक का उपयोग अधिकारियों, कर्मचारियों या ग्राहकों का रूप धारण करने और उन्हें संवेदनशील जानकारी प्रकट करने, धन हस्तांतरति करने या गलत नरिणय लेने के लिये भ्रमति करने हेतु किया जा सकता है।
 - उदाहरण के लिये, एक CEO के डीपफेक ऑडियो का इस्तेमाल एक कर्मचारी को भ्रमति करने और धोखाधडीपूर्ण खाते में 2,43,000 अमेरिकी डॉलर हस्तांतरति करने के लिये किया गया था।

डीपफेक पर अंकुश लगाने के लिये सरकार द्वारा प्रवर्तति नयिम

- **आईटी अधिनयिम 2000 और आईटी नयिम 2021:** आईटी अधिनयिम और आईटी नयिम दोनों में स्पष्ट नरिदेश दिये गए हैं जो सोशल मीडिया मध्यस्थों पर ज़मिमेदारी डालते हैं कवि यह सुनिश्चित करें कि इस तरह के डीपफेक वीडियो या फोटो को जल्द से जल्द हटा दिया जाएगा। ऐसा न करने पर तीन वर्ष तक की कैद और 1 लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान है।
 - **आईटी अधिनयिम की धारा 66D:** आईटी अधिनयिम 2000 की धारा 66D में कहा गया है कजिो कोई भी संचार उपकरण या कंप्यूटर संसाधन का उपयोग कर प्रतरूपण के माध्यम से धोखाधडी (cheating by personating) करता है, उसे तीन वर्ष तक की कैद और एक लाख रुपए तक के जुर्माने से दंडित किया जा सकता है।
 - **नयिम 3(1)(b)(vii):** यह नयिम कहता है कि सोशल मीडिया मध्यस्थों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके प्लेटफॉर्म के

उपयोगकर्ता किसी भी ऐसी सामग्री को होस्ट न करें जो किसी अन्य व्यक्तिका प्रतिरूपण करती हो।

- **नियम 3(2)(b):** ऐसी किसी सामग्री के वरिद्ध शिकायत प्राप्त होने के 24 घंटे के भीतर ऐसी सामग्री को हटाना आवश्यक है।



डीपफेक के खतरे से नपिटने के लिये क्या किया जाना चाहिये?

- **अन्य देशों के अनुभव से सीखना:** डीपफेक के जीवनचक्र को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है - **निरमाण, प्रसार और इसका पता लगाना**। AI नियमन का उपयोग गैरकानूनी या गैर-सहमति वाले डीपफेक के निरमाण के शमन के लिये किया जा सकता है।
 - **चीन जैसे देश** जिन तरीकों से इस तरह के नियमन की ओर आगे बढ़ रहे हैं, उनमें से एक यह है कि डीपफेक प्रौद्योगिकियों के प्रदाताओं को अपने वीडियो में मौजूद लोगों की सहमति प्राप्त करने, उपयोगकर्ताओं की पहचान सत्यापित करने और उन्हें साधन या अवलंब (recourse) प्रदान करने की आवश्यकता है।
 - डीपफेक से होने वाले नुकसान को रोकने के लिये **कनाडा का दृष्टिकोण** यह रहा है कि वित्तीय जन जागरूकता अभियान चलाए जाएँ और ऐसे विधान बनाए जाएँ जो दुर्भावनापूर्ण इरादे से डीपफेक के सृजन एवं वितरण को अवैध बना देंगे।
- **सभी AI-जनित वीडियो में वॉटरमार्क जोड़ना:** AI-जनित वीडियो में वॉटरमार्क जोड़ना प्रभावी पहचान और श्रेय (attribution) के लिये आवश्यक है। वॉटरमार्क विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करते हुए सामग्री के उद्गम और स्वामित्व को प्रकट करते हैं। वे सामग्री के निर्माता या स्रोत को स्पष्ट करके इसकी पहचान में सहायता करते हैं, विशेष रूप से जब इन्हें विभिन्न संदर्भों में साझा किया जाता है।
 - दृश्यमान वॉटरमार्क अनधिकृत उपयोग के वरिद्ध एक नकारक के रूप में भी कार्य करते हैं, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सामग्री के स्रोत या उद्गम का पता लगाया जा सकता है।
 - इसके अलावा, वॉटरमार्क मूल निर्माता के अधिकारों का प्रमाण प्रदान कर जवाबदेही का समर्थन करते हैं; इस प्रकार AI-जनित सामग्री के लिये कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा सुरक्षा के प्रवर्तन को सरल बनाते हैं।
- **उपयोगकर्ताओं को अनुचित सामग्री अपलोड करने से रोकना:** ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को उपयोगकर्ताओं को उनकी सामग्री नीतियों के बारे में शिक्षित और सूचित करने के लिये कदम उठाने चाहिए तथा उन्हें अनुचित सामग्री अपलोड करने से रोकने के लिये उपाय भी लागू करने चाहिए।
- **डीपफेक डिटेक्शन तकनीकों का विकास और सुधार:** इसमें अधिक परिष्कृत एल्गोरिदम का उपयोग करने के साथ ही नए तरीकों को विकसित करना शामिल हो सकता है जो डीपफेक के संदर्भ, मेटाडेटा या अन्य कारकों के आधार पर उनकी पहचान कर सकते हैं।
- **डिजिटल शासन और विधान को सुदृढ़ करना:** यह ऐसे स्पष्ट एवं संगत कानूनों एवं नीतियों को संलग्न कर सकता है जो डीपफेक के दुर्भावनापूर्ण उपयोग को प्रतिषेधित एवं प्रतिबंधित करते हैं, साथ ही डिजिटल नुकसान के पीड़ितों और अपराधियों के लिये प्रभावी उपचार एवं प्रतिबंध प्रदान करते हैं।
- **मीडिया साक्षरता और जागरूकता बढ़ाना:** इसमें जनता और मीडिया को डीपफेक के असतत्त्व एवं संभावित प्रभाव के बारे में शिक्षित करना, साथ ही उन्हें संदिग्ध सामग्री को सत्यापित करने और रिपोर्टिंग करने के लिये कौशल एवं साधन प्रदान करना शामिल हो सकता है।
- **डीपफेक प्रौद्योगिकी के नैतिक और उत्तरदायी उपयोग को बढ़ावा देना:** इसमें डीपफेक प्रौद्योगिकी के सृजनकर्ताओं और उपयोगकर्ताओं के लिये आचार संहिता एवं मानकों की स्थापना और कार्यान्वयन के साथ ही इसके सकारात्मक एवं लाभकारी अनुप्रयोगों को प्रोत्साहित करना शामिल हो सकता है।

अभ्यास प्रश्न: डीपफेक प्रौद्योगिकी के संभावित उपयोग एवं खतरों की चर्चा कीजिये। इस संदर्भ में, उन उपायों पर भी विचार कीजिये जो सरकारें और प्रौद्योगिकी कंपनियाँ डीपफेक के नकारात्मक परिणामों के शमन के लिये अपना सकती हैं।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/deepfakes-opportunities,-threats,-and-regulation>

